धर्म और दर्शन (B.A III)

मानव जिज्ञासा का जन्म प्रकृति के गोद में हुआ है एक ओर प्राकृतिक एवं घटनाओं को देखकर उनके रहस्य को जानने की जिज्ञासा होती है वहीं दूसरी ओर उन्हें सांसारिक दुःखों से छूटने की अभिलाषा भी है। इस लिए परम तत्व के साथ परम सुख की खोज भी दर्शन का एक मुख्य अंग रहा है दर्शन मनुष्य का विशुद्ध बौद्धिक प्रयास है जिसके द्वारा विश्व को सम्पूर्णता में समझने की चेष्टा करता है।

धर्म की उत्पत्ति कब और कैसे हुई यह निश्चय विवादास्पद है फिर भी हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि धर्म की उत्पत्ति मनुष्य के अन्दर सतत विद्यमान उस आध्यात्मिक भूख से होती है जो उसकी अपूर्णता को दूर कर पूर्णता की प्राप्ति के लिए सदा प्रेरित करती रहती है। यह भूख अपूर्णता की चेतना से पैदा होती है। प्राकृतिक शक्तियां वायु अग्नि, अनावृष्टि के आगे यह जिज्ञासु मानव अपने को बहुत कमजोर पाता है। उन घटनाओं को अनुकूल बनाने के लिए उन घटनाओं के पीछे काम करने वाली शक्ति का उपासना करने लगता है। इस प्रकार धार्मिक धार्मिक चेतना की उत्पत्ति असहाय एवं अपूर्णता की भावना से होती है।

विज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान उसकी आध्यात्मिक भूख मिटाने में असमर्थ है। अपूर्ण से अनन्त एवं शक्तिमान बनने की चाह उसे सदैव प्रेरित

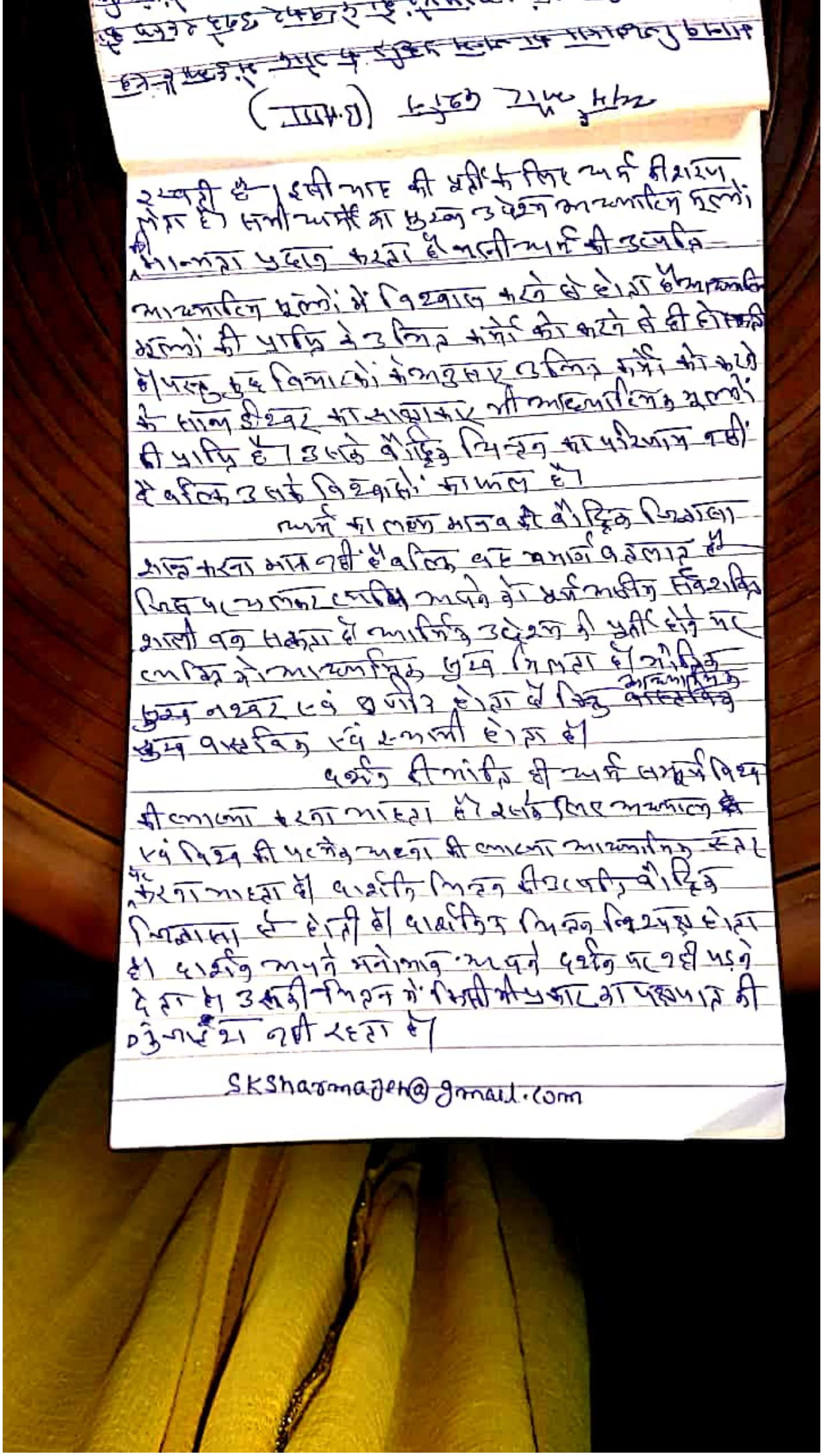

[illegible]

(III A.D) [illegible]

रखती है। इसी बात की पुष्टि के लिए धर्म की शरण लेता है। सभी धर्मों का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक मूल्यों की मान्यता प्रदान करता है। सभी धर्मों की उत्पत्ति आध्यात्मिक मूल्यों में विश्वास करने से होता है। आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति के उचित कर्मों को करने से ही लौकिक है परन्तु इन क्रियाओं के अनुसार उचित कर्मों को करने के साथ ईश्वर का साक्षात्कार भी आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति है। उनके बौद्धिक चिन्तन का परिणाम नहीं है बल्कि उनके विश्वासों का फल है।

धर्म का लक्ष्य मानव की बौद्धिक जिज्ञासा शान्त करना मात्र नहीं है बल्कि वह मानव व्यवहार को नियन्त्रित [illegible] अपने को धर्म आधारित [illegible] शाली बन सकता है धार्मिक उद्देश्य की पूर्ति होने पर व्यक्ति को आध्यात्मिक सुख मिलता है। भौतिक सुख नश्वर एवं क्षणिक होता है किन्तु आध्यात्मिक सुख वास्तविक एवं स्थायी होता है।

दर्शन भी धर्म की भांति ही सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या करना चाहता है। इसके लिए आत्मा, ईश्वर एवं विश्व की परम सत्ता की व्याख्या आध्यात्मिक स्तर पर करना चाहता है। दार्शनिक चिन्तन की उत्पत्ति बौद्धिक जिज्ञासा से होती है। दार्शनिक चिन्तन निष्पक्ष होता है। दार्शनिक अपने मनोभाव अपने दर्शन पर नहीं पड़ने देता है। उसके चिन्तन में किसी भी प्रकार का पक्षपात की गुंजाइश नहीं रहता है।

SKsharmajeh@gmail.com